

देश-देशांतर/द बगि पकिचर: भारत-आसयान संबंधों के 25 वर्ष

संदर्भ व पृष्ठभूमि

25-26 जनवरी को नई दिल्ली में आयोजित आसयान-भारत मैत्री रजत जयंती शिखर सम्मेलन (ASEAN-India Commemorative Summit) और राजपथ पर भारतीय गणतंत्र की 69वीं वर्षगांठ पर आयोजित परेड में आसयान के सभी 10 देशों के राष्ट्राध्यक्षों की बतौर मुख्य अतिथि मौजूदगी।

कहाँ तक पहुँची 25 साल की दोस्ती?

- **सम्मेलन की थीम:** साझा मूल्य, सामान्य नयति (Shared Values, Common Destiny)
- **सम्मेलन का महत्त्व:** एशिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था (भारत) और आर्थिक रूप से महत्त्वपूर्ण ब्लॉक (आसयान देशों) के बीच साझा सहयोग को बढ़ावा

दोनों पक्षों के बीच सहयोग के प्रमुख बटु

प्लान ऑफ एक्शन

आसयान-भारत के बीच में शांति, सहयोग व साझा समृद्धि को बढ़ाने के लिये दीर्घकालिक आसयान-भारत की भागीदारी के लिये रोडमैप पर हस्ताक्षर किये गए थे। इसका तीसरा संस्करण (2016-20) अगस्त 2015 में हुई आसयान-भारत के वदेश मंत्रियों की बैठक में अपनाया गया था। इस समयावधि में प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान की गई है।

(टीम दृष्टि इनपुट)

- भारत के प्रमुख साझेदार और बाजार, जैसे-आसयान एवं पूर्वी एशिया से लेकर उत्तरी अमेरिका तक पूरव की ओर अवस्थिति हैं।
- भूमि एवं समुद्री मार्गों से जुड़े दक्षिण-पूरव एशिया और आसयान के साथ 'लुक ईस्ट' नीति एवं पछिले तीन वर्षों से 'एक्ट ईस्ट' नीतिके तहत द्विपक्षीय संबंध और मज़बूत होते जा रहे हैं।
- आसयान और भारत रणनीतिक साझेदार हैं और 30 व्यवस्थाओं के ज़रिये व्यापक आधार वाली आपसी साझेदारी को आगे बढ़ा रहे हैं।
- आसयान के प्रत्येक सदस्य देश के साथ भारत की राजनयिक, आर्थिक और सुरक्षा साझेदारी बढ़ रही है।

आर्थिक सहयोग

- आसयान भारत का चौथा सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है और भारत आसयान का सातवां सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है।
- आसयान के साथ भारत का व्यापार 2016-17 में बढ़कर 70 अरब डॉलर का हो गया है, जबकि 2015-16 में यह 65 अरब डॉलर था।
- संगापुर की अगुवाई में आसयान भारत का प्रमुख नविश स्रोत है। आसयान देशों व भारत के बीच वर्ष 2000 से नविश प्रवाह 12.5 प्रतिशत बढ़ चुका है।
- अप्रैल 2000 से अगस्त 2017 के बीच आसयान से भारत में नविश प्रवाह 514.73 बिलियन डॉलर था।
- भारत द्वारा वदेश में किये जाने वाले नविश का 20 प्रतिशत से भी अधिक हिस्सा आसयान के देशों में जाता है।
- इस क्षेत्र में भारत द्वारा किये गए मुक्त व्यापार समझौते अपनी तरह के सबसे पुराने समझौते हैं और किसी भी अन्य क्षेत्र की तुलना में सबसे महत्त्वकांक्षी हैं।

सहयोग बढ़ाने के 3 प्रमुख क्षेत्र

आसयान और भारत की क्षेत्र में शांति और सुरक्षा में समान हितों को साझा करते हुए खुला, संतुलित एवं समावेशी क्षेत्रीय संरचना है। भारत हृदि महासागर से लेकर प्रशांत महासागर तक बड़े समुद्री क्षेत्रों के साथ रणनीतिक रूप से अवस्थित है। ये समुद्री क्षेत्र आसयान के कई सदस्य देशों के लिये महत्त्वपूर्ण व्यापार के रास्ते भी हैं।

1. आसयान और भारत को व्यापार एवं नविश को बढ़ावा देने के लिये प्रयासों को बढ़ाना होगा क्योंकि इन दोनों के दोहन की अपार संभावनाएँ हैं। एआईएफटीए से आगे निकलकर एक उच्च गुणवत्तापूर्ण क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी के निर्माण के लिये काम करना होगा। इससे एक समेकित

एशियाई बाजार का निर्माण होगा, जिसमें दुनिया की लगभग आधी आबादी और दुनिया की जीडीपी का एक-तह्रिहाई हिस्सा रहित होगा। नयिमों एवं वनियिमनों को युक्तसिंगत बनाने से दोनों पक्षों में नविशों को प्रोत्साहन मल्लिगा, भारत की 'एक्ट ईस्ट' नीति को बढावा मल्लिगा और क्षेत्र में 'मेड इन इंडिया' का नरियात सुगम होगा।

2. भारत और आसयान को बेहतर भूमि, वायु एवं सामुद्रकि कनेक्टविटि से काफी लाभ मलि सकता है। त्रसितरीय भारत-म्यांमार-थाइलैंड राजमार्ग के वसितार के काम को गति देने की आवश्यकता है। आसयान-भारत वायु परविहन समझौते को शीघ्र अंजाम देने से भौतिक कनेक्टविटि को बढावा मल्लिगा। इससे क्षेत्र में लोगों का आवागमन बढने के साथ ही दोनों पक्षों के परविहनों हेतु नए और उभरते बाजारों, वशेषकर व्यवसाय, नविश और पर्यटन को भी बढावा मल्लिगा।
3. डिजिटल कनेक्टविटि सहयोग का एक अन्य महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है और यह भविष्य में दोनों पक्षों के लोगों के बीच आपसी संपर्क को आकार दे सकता है। जैसे कि भारत की 'आधार योजना' भारत-आसयान फनितैक प्लेटफॉर्म को समन्वति करने या ई-पेमेंट प्रणालियों को कनेक्ट करने के लयि कई नए अवसरों का सृजन कर सकती है।

सहयोग के अन्य क्षेत्र

- आसयान-भारत संबंध 2012 में दोनों पक्षों के संबंधों की 20वीं वर्षगांठ पर रणनीतिक साझेदारी में बदल गए।
- दोनों पक्षों के बीच एक वार्षिक लीडर्स समिति एवं सात मंत्रसितरीय वार्ताओं सहति लगभग 30 मंच हैं।
- भारत सकरयितापूर्वक आसयान क्षेत्रीय फोरम, आसयान रक्षा मंत्रियों की बैठक एवं पूर्व एशिया समिति सहति आसयान के नेतृत्व वाले मंचों में भाग लेता है।
- भारत का वार्षिक ट्रेक 1.5 कार्यक्रम **दिल्ली संवाद** आसयान-भारत के बीच राजनीतिक-सुरक्षा और आर्थिक मुद्दों पर चर्चा के लयि है।
- आसयान-भारत सामरिक साझेदारी से संबंधति वभिनिन मुद्दों पर कार्यशालाओं, सेमिनारों और सम्मेलनों का आयोजन करने के लयि आसयान-भारत केंद्र की स्थापना की गई है।
- अंतरकिष प्रौद्योगिकी और मैरीटाइम सुरक्षा को और पुख्ता करने के लयि तथा आतंकवाद नरिोधक उपायों के लयि भी भारत-आसयान के बीच सहयोग कयिा जाता है।
- आसयान-भारत के बीच वजिज्ञान और प्रौद्योगिकी विकास कोष, आसयान-भारत सहयोग नधि, आसयान-भारत ग्रीन कोष, आसयान-भारत एसएंडटी विकास फंड के साथ-साथ राजनीतिक सुरक्षा सहयोग, सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्र में भी सहयोग कयिा जाता है।
- आसयान-भारत मलिकर कृषि, वजिज्ञान और प्रौद्योगिकी, अंतरकिष, पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन, मानव संसाधन विकास, नवीकरणीय ऊर्जा, पर्यटन आदि क्षेत्रों में वभिनिन परयोजनाओं के कार्यान्वयन के माध्यम से सहयोग कर रहे हैं। (टीम वृष्ट इनपुट)

कनेक्टविटि

- आसयान-भारत कनेक्टविटि दोनों पक्षों के लयि बेहद महत्त्वपूर्ण है। आसयान संपर्क समन्वय समिति का तीसरा संवाद साझेदार भारत 2013 में बना था।
- आसयान-भारत के बीच समुद्री और हवाई क्षेत्रों में संपर्क का तेज़ी से वसितार हुआ है।
- दोनों पक्ष प्राथमिकता के आधार पर महाद्वीपीय दक्षिण-पूर्व एशिया में राजमार्गों का वसितार कर रहे हैं।
- भारत-म्यांमार-थाइलैंड त्रपिकीय राजमार्ग को आपस में जोड़ने वाली सड़कों के साथ यात्रयियों व माल परविहन को जोड़ने के लयि काम चल रहा है।
- इसके परणामस्वरूप दक्षिण-पूर्व एशिया में पर्यटन के सबसे तेज़ी से बढते स्रोतों में अब भारत भी शामिल हो गया है।

आसयान के 10 देश और भारत

थाइलैंड, वयितनाम, इंडोनेशिया, मलेशिया, फलिपींस, सगिापुर, म्यांमार, कंबोडिया, लाओस और ब्रूनेई आसयान के 10 सदस्य देश हैं।

सगिापुर भारत और आसयान के बीच एक पुल की तरह है। आज यह पूर्व के साथ हमारे प्रवेश का मुख्य मार्ग है, यह हमारा प्रमुख आर्थिक साझेदार है और महत्त्वपूर्ण सामरिक सहयोगी भी है जिसकी झलक कई क्षेत्रीय और वैश्विक मंचों में हमारी सदस्यता से परलिक्षति होती है। सगिापुर और भारत सामरिक सहयोगी भी हैं। हमारी आर्थिक साझेदारी में दोनों देशों की प्राथमिकताओं का प्रत्येक क्षेत्र शामिल है। सगिापुर भारत का प्रमुख गंतव्य और नविश स्रोत है। आज हज़ारों भारतीय कंपनयिों सगिापुर में पंजीकृत हैं।

थाइलैंड आसयान देशों में से एक अहम व्यापारिक साझेदार के रूप में उभर कर सामने आया है और भारत में नविश करने वाले महत्त्वपूर्ण देशों में से एक है। भारत और थाइलैंड के बीच द्वपिक्षीय व्यापार पछिले दशक में बढकर दोगुने से अधिक हो गया है। दोनों देशों के संबंध कई क्षेत्रों में वसितार रूप से वकिसति हुए हैं और दक्षिण और दक्षिण-पूर्व को जोड़ने वाले महत्त्वपूर्ण क्षेत्रीय साझेदार हैं। हम आसयान, पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन और बमिस्टेक (बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लयि बंगाल की खाड़ी के देशों के संगठन) में घनषिठ सहयोगी तो हैं ही, मीकांग-गंगा सहयोग, एशिया सहयोग वार्ता और हनिद महासागर के तटवर्ती देशों के संगठन में भी साझेदार हैं।

वयितनाम के साथ भारत के संबंध बढते हुए आर्थिक और वाणजियिक संपर्कों को रेखांकति करते हैं। भारत और वयितनाम के बीच द्वपिक्षीय व्यापार दस वर्षों में करीब 10 गुना बढ गया है। रक्षा सहयोग भारत और वयितनाम के बीच सामरिक साझेदारी के महत्त्वपूर्ण आधार स्तंभ के रूप में उभरकर सामने आया है। वजिज्ञान और तकनीक दोनों देशों के बीच सहयोग का एक अन्य महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है।

म्यांमार के साथ भारत की 1600 किलोमीटर से ज़्यादा लंबी साझा ज़मीनी और समुद्री सीमा है। पछिले दशक में हमारा व्यापार दोगुने से भी अधिक बढ गया है। हमारे नविश संबंध भी काफी सुदृढ हुए हैं। म्यांमार के साथ भारत के संबंधों में वकिस संबंधी सहयोग की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। फलिहाल भारत की ओर से सहायता राशि 1.73 अरब डालर से अधिक है। भारत का पारदर्शी वकिस सहयोग म्यांमार की राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुसार है जिसका आसयान से जुड़ने के मास्टर प्लान यानी वृहद योजना के साथ पूरा तालमेल है।

फलीपींस और भारत दोनों सेवा के क्षेत्र में मज़बूत हैं और सबसे ऊँची विकास दर वाले दुनिया के प्रमुख देशों में शामिल हैं। व्यापार और कारोबार की क्षमताओं की वजह से दोनों देशों में अनेक संभावनाएँ हैं। समावेशी विकास और भ्रष्टाचार से संघर्ष के बारे में दोनों देश एक राय हैं। भारत यूनीवर्सल आईडी कार्ड, वित्तीय समावेशन, बैंकिंग को सबकी पहुँच के दायरे में लाने, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण और नकदी वहीन लेन-देन को बढ़ावा देने के बारे में अपने अनुभवों को फलीपींस के साथ साझा कर रहा है। सभी को वाजिब दामों पर दवाएँ उपलब्ध कराने की फलीपींस सरकार की प्राथमिकता में भी भारत ने सहयोग का प्रस्ताव दिया है। आतंकवाद की चुनौती से नबिटने के लिये भी दोनों देश आपसी सहयोग बढ़ा रहे हैं।

मलेशिया और भारत सामरिक साझेदार हैं और कई बहुपक्षीय तथा क्षेत्रीय मंचों में भी सहयोगी हैं। आसियान में मलेशिया भारत के तीसरे सबसे बड़े व्यापारिक साझेदार के रूप में उभर कर सामने आया है और भारत में निवेश करने वाला आसियान देशों में से महत्वपूर्ण निवेशक है। पछिले दस वर्षों में दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार दोगुने से ज्यादा बढ़ गया है। 2011 से भारत और मलेशिया के बीच वसितृत द्विपक्षीय आर्थिक सहयोग समझौता जारी है। यह समझौता इस अर्थ में अनोखा है कि इसने वास्तु व्यापार के क्षेत्र में आसियान से कहीं अधिक वचनबद्धता वाला प्रस्ताव किया और सेवाओं के विनियम में डब्ल्यूटीओ से भी अधिक के प्रस्ताव किये। दोनों देशों के बीच दोहरे कराधान को रोकने के संशोधित समझौते पर मई 2012 में दस्तखत किये गए और सीमा शुल्क के क्षेत्र में सहयोग के लिये 2013 में समझौता हुआ जिसने हमारे व्यापार और निवेश सहयोग को और भी सुवर्धजनक बना दिया है।

ब्रूनेई और भारत के बीच द्विपक्षीय व्यापार पछिले दशक में दोगुने से ज्यादा हुआ है। भारत और ब्रूनेई संयुक्त राष्ट्र, गुटनरिपेक्ष आंदोलन, राष्ट्रमंडल, एआरएफ आदि संगठनों के साझा सदस्य हैं। विकासशील देशों के रूप में मज़बूत पारस्परिक और सांस्कृतिक संबंधों के साथ प्रमुख अंतरराष्ट्रीय विषयों पर ब्रूनेई और भारत के विचारों में काफी हद तक समानता है।

लाओस और भारत के बीच संबंध व्यापक रूप से कई क्षेत्रों में विकसित हुए हैं। भारत लाओस के वदियुत वितरण एवं कृषि क्षेत्र में सक्रिय रूप से काम कर रहा है। दोनों देश अनेक बहुपक्षीय और क्षेत्रीय मंचों पर सहयोग करते हैं। यद्यपि दोनों देशों के बीच होने वाला कारोबार संभावनाओं से कम है, लेकिन लाओस से भारत में नरियात को प्रोत्साहित करने के लिये भारत ने उसे ड्यूटी फ्री टैरिफ प्रेफरेंस स्कीम की सुवर्धना दी हुई है।

इंडोनेशिया और भारत के बीच हृदि महासागर में केवल 90 समुद्री मील की दूरी है और रणनीतिक सहयोगियों के रूप में दोनों देशों का सहयोग राजनीतिक, आर्थिक, रक्षा एवं सुरक्षा, सांस्कृतिक एवं लोगों के बीच संबंधों जैसे सभी क्षेत्रों में फैला हुआ है। आसियान में इंडोनेशिया हमारा लगातार सबसे बड़ा व्यापारिक सहयोगी बना हुआ है। भारत और इंडोनेशिया के बीच द्विपक्षीय व्यापार पछिले 10 वर्षों में 2.5 गुना बढ़ा है।

कंबोडिया आसियान और अन्य वैश्विक मंचों पर भारत का एक महत्वपूर्ण सहयोगी और साझेदार है। 1981 में खमेर रूज की सत्ता समाप्त होने के बाद भारत पहला ऐसा देश था जिसने वहाँ की नई सरकार को मान्यता दी थी। पेरिस शांति समझौता एवं 1991 में इसको पूर्ण किये जाने में भी भारत शामिल था। दोनों देशों ने अपने सहयोग का संस्थागत क्षमता विकास, मानव संसाधन विकास, विकासात्मक एवं सामाजिक परियोजनाएँ, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, सैन्य सहयोग, पर्यटन और लोगों के बीच संबंधों जैसे विविध क्षेत्रों में वसितार किया है।

(टीम दृष्टाइनपुट)

निष्कर्ष: भारत व आसियान के बीच बहुपक्षीय संबंधों का विकास देश में आर्थिक उदारीकरण के बाद से शुरू हुआ। इसी कड़ी के 25 साल पूरे होने के मौके पर आसियान-भारत मैत्री रजत जयंती शिखर सम्मेलन में दोनों पक्षों ने भविष्य की यात्रा के लिये अपने संकल्प को दोहराया। भारत और आसियान की अर्थव्यवस्था साथ मिलकर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन सकती है। भारत एवं आसियान देशों के संबंध किसी भी प्रकार की प्रतिस्पर्धा एवं दावेदारी से मुक्त हैं और दोनों के पास भविष्य के लिये एक साझा दृष्टिकोण है, जो समावेशन एवं एकीकरण, सभी राष्ट्रों की सार्वभौमिक समानता तथा व्यापार और पारस्परिक संबंधों के लिये स्वतंत्र एवं खुले मार्गों के समर्थन की प्रतिबद्धता पर आधारित है। भारत के विकास की यात्रा में देश का उत्तर-पूर्व क्षेत्र भी प्रगति के पथ पर है और आसियान देशों के साथ कनेक्टिविटी से इस प्रगति को और गति मिलेगी।